B.A Part-1 (H & Subsi) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौंक

जैन दर्शन में जीव की अवधारणा।

Ans. जिस सत्ता को अन्य भारतीय दर्शनों में साधारणतया आत्मा कहा गया है उसी को जैन-दर्शन में जीव की संज्ञा दी गई है। जैन के अनुसार चेतन द्रव्य को जीव कहा गया है। यानी चेतना जीव का मूल लक्षण है। जैन के अनुसार "चेतना लक्षणो जीवः" चैतन्य जीव में सर्वदा अनुभूति रहने के कारण जीव को प्रकाशमान माना जाता है। वह अपने आप को प्रकाशित करता है तथा अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। जैन मानता है कि जीव (आत्मा) नित्य है जबकि शरीर अनित्य एवं नाशवान है। जीव आकारविहीन है, जबकि शरीर आकारयुक्त है। जीव ज्ञाता है, कर्ता है, भोक्ता है। जैन मतानुसार जीव स्वभावः अनन्त है। जीव में चार प्रकार की पूर्णताएँ पायी जाती हैं, जिन्हें 'अनन्त-चतुष्टय' कहा जाता है। ये हैं- अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति तथा अनन्त सुख या आनन्द। जैनियों के अनुसार, शरीर के आकार में अन्तर होने के कारण आत्मा (जीव) के भिन्न-भिन्न आकार हो जाते हैं। हाथी में निवास करनेवाली आत्मा का रूप वृहत है। इसके विपरीत चींटी में व्याप्त आत्मा का रूप सूक्ष्म है। जीव के दो प्रकार बतलाये गये हैं- (i) बद्ध (ii) मुक्त मुक्त जीव उन आत्माओं को कहा जाता है जिन्होंने मोक्ष प्राप्त कर लिया है। इसके विपरीत बद्ध जीव उन्हें कहा गया है जो बन्धनग्रस्त हैं। जैन-दर्शन में बद्ध जीव भी दो प्रकार के हैं :-

(i) स्थावर तथा (ii) त्रय। एकेन्द्रिय जीव स्थावर हैं तथा

अनेकेन्द्रिय जीव अथ कहलाते हैं। जैन दर्शन में ज्ञान के दो भेद किये गये हैं। (i) अपरोक्ष ज्ञान तथा (ii) परोक्ष ज्ञान अपरोक्ष ज्ञान के भी तीन भेद हैं — (i) अवधि (ii) मन पर्याय तथा (iii) केवल ज्ञान